सतावर

RSMPB JAIPUR

राजस्थान स्टेट मेडिसिनल प्लान्ट्स बोर्ड

104-106, आयुष भवन, सैक्टर-26, प्रताप नगर, जयपुर
फोन नं. - 0141-2796975, 0141-2796845, फेक्स : 0141-2796975
Mail ID-rsmpboard@gmail.com
Website : www.rsmpb.com

सतावर

वानस्पतिक नाम – Asparagus racemosus

परिचय एवं महत्व

विभिन्न औषधीय पौधों में सतावर एक महत्वपूर्ण औषधीय पौधा है जिसका उपयोग प्राचीन समय से ही पारम्परिक औषधि के रूप में किया जा रहा है। सतावर एक बहुवर्षीय कन्दयुक्त झाड़ीनुमा औषधीय पौधा है, जिसको शतमूली, सतावरी तथा शतवीर्य भी कहते है। सतावर लिलियसी कुल का पौधा है। सतावर का पौधा एशिया का देशज है, जिसकी बेलें सम्पूर्ण भारत वर्ष में पायी जाती हैं। सतावर का क्षूप 3–5 फीट ऊँचा होता है जो कंटक युक्त झाड़ीनुमा आरोही लता के समान बढ़ता है। इसलिए पौधें को सहारे की आवश्यकता होती है जो बांस या अन्य किसी शाखा द्वारा सहारा देना चाहिए। पत्तियां बारीक सुई के समान होती है, जो 1.0–2.5 से0मी0 तक लम्बी होती हैं। इसके फल मटर के आकार वाले कठोर गुठली के रूप में होते हैं। जो पकने पर लाल हो जाते हैं। इसके बीज काले तथा जड़ें कन्दयुक्त लम्बी गुच्छों में होती है।

औषधीय उपयोग

सतावर की कन्दिल जड़े मधुर एवं रसयुक्त होती है। इसकी औषधीय गुणवत्ता बुद्धिवर्धक, दुग्धवर्धक, शुक्रवर्धक, बलकारक, कामोद्दीपक, मूत्रावरोध, मानसिक रोग, अतिसार, वात, पित्त विकार दूर करने वाली के रूप में जानी जाती है। सतावर की जड़ों का उपयोग आदिवासी क्षेत्रों में दुधारू पशुओं में होने वाले

थनैला रोग के उपचार हेतु व्यापक रूप से किया जाता है।

भूमि एवं जलवायु

इसकी खेती के उष्ण, समशीतोष्ण एवं शीतोष्ण नम जलवायु सर्वोत्तम रहती हैं। इसकी खेती के लिए बलुई, बलुई दोमट, लाल मिट्टी जिसमें जल निकास की उचित व्यवस्था हो, उपयुक्त होती है।

बीज की मात्रा

2.0 से 2.5 कि0ग्रा0 प्रति हेक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है।

पौध नर्सरी

इसकी नर्सरी तैयार करने हेतु नर्सरी बेड़ जिसकी लम्बाई एवं चौड़ाई 2.0x1.0 मीटर रखते है, मई के अन्तिम सप्ताह में बुवाई कर देते है। बीज की बुवाई नर्सरी बेड पर कतार से कतार एवं पौध से पौध की दूरी 5 से0मी0 रखते हुए करते हैं। लगभग एक माह बाद बीजों से अंकुरण प्रारम्भ हो जाता है। नर्सरी तैयार होने में 2.5 से 3.0 माह का समय लगता है।

रोपण समय

नर्सरी में मई के अन्तिम सप्ताह में बोये गये बीज अंकुरण पश्चात् मध्य जुलाई से अगस्त तक लगभग 75–80 दिन में रोपण हेतु तैयार हो जाते है।

रोपण विधि एवं पौध से पौध की दूरी

पौध रोपण का कार्य अगस्त माह में करना सर्वोत्तम रहता है। पौध रोपण करने से पूर्व खेत में 1x1 मीटर पर 30 x 30 x 30 से0मी0 के गड्ढ़े

खोदकर मिट्टी, खाद एवं बालू का 1 : 1 : 1 के मिश्रण से गड्ढ़ें भर देते है। पौध रोपण 60x60 से0मी0 करने से अच्छी उपज प्राप्त होती है। लेकिन 60x90 से0मी0 एवं 90x90 से0मी0 की दूरी पर भी कर सकते हैं। बागों में दो पौधों के बीच की जमीन में इसकी खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है जो कि अतिरिक्त आय का अच्छा स्रोत है।

प्राजतियाँ

प्रजातियों के विकास हेतु प्रयास जारी है। आशा है आगामी 2–3 वर्षो में उन्नत प्रजातियों का मानकीकरण हो जायेगा।

खाद एवं उर्वरक

खेत की तैयारी के समय 10–15 टन प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर की सड़ी हुयी खाद की आवश्यकता पड़ती है तथा जहां तक सम्भव हसे रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग न करें।

निराई गुड़ाई

सतावर की अच्छी पैदावर के लिए निराई–गुड़ाई आवश्यक होती है। पौध रोपण के लगभग 3 माह बाद पहली निराई एवं गुड़ाई कर देनी चाहिए। इसके पश्चात् वर्ष में दो बार निराई–गुड़ाई करके खेत से खरपतवार निकाल देना चाहिए।

सिंचाई

ग्रीष्म ऋतु में एक माह के अन्तराल पर दो बार सिंचाई की आवश्यकता होती है।

फसल परिपक्वता एवं कंदों की खुदाई

रोपाई के 24–30 माह बाद पौध खुदाई हेतु तैयार हो जाती है। खुदाई का सर्वोत्तम समय अक्टूबर–नवम्बर माह का होता है। खुदाई के उपरान्त जड़ों को 10 मिन्ट के लिए पानी में उबाल कर छील लेते है। जड़ के मध्य में एक धागा होता है जिसे खींचकर निकाल देने के उपरान्त ही जड़े ठीक प्रकार से सूखती हैं। इसके बाद धूप में अच्छी तरह सुखा लेते हैं तत्पश्चात् पॉलीथीन की बोरियों में भरकर सूखे स्थान पर भण्डारित कर लेते हैं।

शोधोपरान्त संस्तुति

पौध रोपण 60x60 से0मी0 एवं कंदों की खुदाई 24 से 27 माह बाद करने से सतावर की सबसे अच्छी उपज को प्राप्त किया गया है।

उपज एवं आर्थिक लाभ

60–80 क्विंटल सूखी सतावर की जड़े प्रति हेक्टेयर प्राप्त की जा सकती है। सतावर की खेती करके 2.0–2.5 वर्ष में 1.0–1.5 लाख रूपया प्रति हेक्टेयर तक शुद्व लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

संभावनाएं

इस प्रकार किसान राजस्थान में उपरोक्त तकनीकी द्वारा सतावर की अच्छी उपज प्राप्त करके बेहतर आर्थिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है। चूंकि हमारे देश में जलवायु एवं भूमि औषधीय पौधों की खेती के लिए उपयुक्त है, नई कृषि तकनीक भी विकसित

किया गया है एवं आगे किया जा रहा हैं। केवल समस्या राजस्थान में विपणन की है। अतः यदि विपणन की समस्या को सुलझा लिया जाय तो राजस्थान में औषधीय पौधों–सतावर की खेती सफलता पूर्वक करके किसान बेहतर आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकता है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :-

राजस्थान स्टेट मेडिसिनल प्लान्ट्स बोर्ड

104-106, आयुष भवन, सैक्टर-26, प्रताप नगर, जयपुर

फोन नं. - 0141-2796975, 0141-2796845, फेक्स : 0141-2796975

Mail ID-rsmpboard@gmail.com, Website : www.rsmpb.com